मिशन शिक्षण संवाद

काव्य रूप

भूगोल

४

बेसिक काव्य सृजन

रचना

प्रतिभा भारद्वाज (स. अ.)

पू. मा. वि. वीरपुर, छबीलगढ़ी

जवाँ, अलीगढ़

पाठ- 1 "संसाधन"

संसाधन हैं वो साधन,
जिनसे हम जीवित रहते हैं।
बिना संसाधनों के क्या?
हम जीवित रह सकते हैं।।

सूर्य प्रकाश, पवन, जल आदि,
अक्षयशील संसाधन होते हैं।
कभी न समाप्त होते यह,
इसीलिए अक्षयशील इन्हें कहते हैं।।

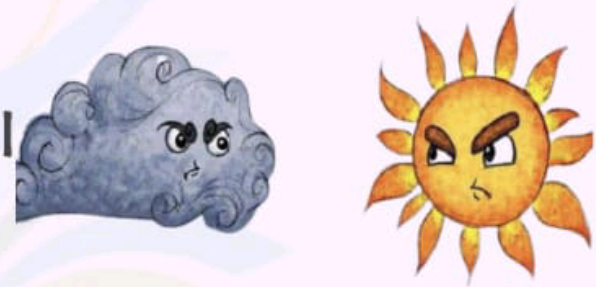

जो संसाधन हैं सीमित मात्रा में,
वे अनवीकरणीय कहलाते हैं।
एक बार उपयोग के बाद,
पुनःप्राप्त ये न हो पाते हैं।।

अनवीकरणीय संसाधनों का,
प्रयोग विवेकपूर्ण करना होगा।
भावी पीढ़ी भी ले सके लाभ इनसे,
संरक्षण इनका करना होगा।।

पाठ- 2 कृषि एवं सिंचाई (भाग -1)

भूमि पर फसल उत्पादन प्रक्रिया,
कृषि है कही जाती।
गेहूँ ,चावल, ज्वार बाजरा,
प्रमुख फसलों में हैं आती।।

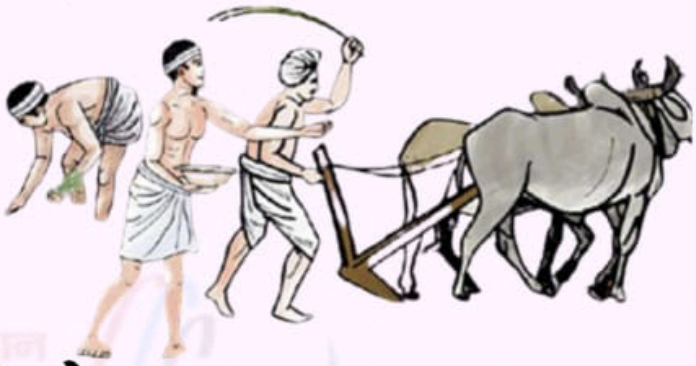

कृत्रिम रूप में पानी देना मिट्टी को,
सिंचाई है कहलाता।
भूमि में हो जब जल आवश्यक,
तब कृषि भूमि पर पानी डाला जाता।।

कृषि कार्य में पशु पालन भी होता है,
पशु पालन भी कृषि विज्ञान की ही शाखा है।
बिखरी ज़मीन जब एक स्थान पर हुई,
चकबंदी से किसानों को बहुत ही आसानी हुई।।

कृषि के क्षेत्र में करे गए जब शोध,
उन्नत कृषि का इससे हुआ बहुत बोध।
हरित क्रांति इसे कहा जाता है,
डा. स्वामीनाथन को जनक माना जाता है।।

पाठ- 2 कृषि एवं सिंचाई (भाग -2)

मौसम के आधार पर,
फसलों के होते हैं, तीन प्रकार।
रबी, खरीफ और ज़ायद,
भूख मिटाएँ सुन पेट की पुकार।।

अक्टूबर, नवम्बर में बोई जाती,
अप्रैल -मई में है काटी जाती।
यही रबी की फसल कहलाती,
रबी में गेहूँ की खेती लहलहाती।।

जून -जौलाई में बोई जाती,
सितम्बर -अक्टूबर में काटी जाती।
मूँगफली, चावल मक्का, कपास,
खरीफ की फसलें हैं कही जाती।।

मार्च -जून में बोई जाती,
जल्दी यह परिपक्व हो जाती है।
ककडी, लौकी, कद्दू ,तरबूज,
जायद फसलें हैं कहीं जाती।।

पाठ- 3 खनिज सम्पदा

खोदकर धरातल पृथ्वी का,
खनिज निकाले जाते हैं।
कुछ खनिजों से ही चिपके,
मूल्यवान अयस्क भी होते हैं।।

एल्युमीनियम धातु का अयस्क,
बॉक्साइट होता है।
इसी से एल्युमीनियम को,
निकालना होता है।।

मैग्नेटाइट, हेमेटाइट,
ये लोहे के अयस्क हैं होते।
लिमोनाइट और सिडेराइट मिलाकर,
ये चार प्रकार के होते हैं।।

सोना, चाँदी भी धात्विक खनिज होते हैं,
खनिज सेंधा नमक हम खाया करते हैं।
ये खनिज होते हैं कितने उपयोगी,
आओ अब इनका अध्ययन करते हैं।।

पाठ- 4 शक्ति के साधन

कोयला, खनिज तेल, जल विद्युत ,
तीन प्रमुख शक्ति के साधन हैं।
औद्योगिक आत्मनिर्भरता देते,
ये शक्ति संसाधन हैं।।

परमाणु ऊर्जा, सौर ऊर्जा,
ये भी शक्ति संसाधन हैं।
विवेकपूर्ण करते जब प्रयोग,
होते तब मानव हित के साधन हैं।।

भोजन बनाने से लेकर,
जग उजियारा ये करते हैं।
अविवेक से यदि करें प्रयोग,
जीवन नष्ट कर सकते हैं।।

उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर में ,
नरौरा परमाणु ऊर्जा केन्द्र है।
उससे विद्युत ऊर्जा है मिलती,
ऊर्जा का ही यहाँ सब खेल है।।

पाठ- 5 उद्योग धन्धे

वायुयान, जलयान, दवाएँ, वस्त्रादि,
भारी उद्योग धन्धों में आते हैं।
अधिक श्रम, पूँजी, मशीन और साधन,
इसके लिए आवश्यक होते हैं।।

कम शक्ति, श्रम पूँजी से ही,
छोटे उद्योग स्थापित हो जाते हैं।
सिलाई मशीन, साइकिल ,माचिस ,
लघु उद्योगों में आते हैं।।

साफ्टवेयर का सबसे ज़्यादा काम,
बेंगलूर में होता है।
इसीलिये भारत की सिलिकॉन घाटी,
बेंगलूर को कहा जाता है।।

झारखंड राज्य में सिंदरी
एक स्थान है,
यहाँ प्रसिद्ध उर्वरक
कारखाना है।
भगवान कृष्ण की
जन्मभूमि मथुरा है,
मथुरा में ही तेलशोधक
कारखाना है।।

कपूरथला में रेल के डिब्बे बनाए जाते हैं,
गुजरात, महाराष्ट्र में सूती वस्त्र उद्योग है।
कृषि पर आधारित उद्योग भी होते हैं,
रेशम, जूट, चीनी, वस्त्र इनसे प्राप्त होते हैं।।

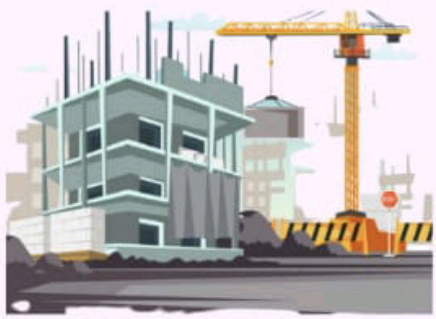

पाठ- 6 यातायात, व्यापार एवं संचार

एक स्थान से दूसरे स्थान पर,
आना-जाना यातायात कहलाता है।
देश के औद्योगिक -आर्थिक विकास,
यातायात के साधनों पर निर्भर करता है।।

वायु परिवहन सबसे तेज़ गति का साधन है,
आने -जाने में इससे समय बचता है।
विदेशी व्यापार समुद्री मार्ग से ज़्यादा होता है,
यह सुविधाजनक और सस्ता पड़ता।।

मोबाइल फोन, इंटरनेट और टेलीविज़न,
संचार साधनों से मिला एक नया विज़न।
आदान -प्रदान सूचनाओं का करते हैं,
ज़िंदगी को भी ये सरल करते हैं।।

वस्तुओं का खरीदना व बेचना,
व्यापार है कहलाता।
यातायात, टेली, वीडियोकांफ्रेंसिंग से,
दूर देश से भी सुलभ है होता।।

पाठ- 7 मानव संसाधन

संसाधन ऐसे स्रोत होते,
उपयोग से जिनके मानव लाभ हैं प्राप्त करते।
प्राकृतिक संसाधन और मानव निर्मित संसाधन,
संसाधनों के प्रकार हैं होते।।

संगठनों के कार्य मानव संसाधन से होते हैं,
बिन मानव संसाधन क्या संगठन चल सकते हैं।
आयु, लिंग ,साक्षरता और जीवन स्तर,
मानव संसाधन के प्रमुख घटक होते हैं।।

देश की भूमि ,सुविधाओं पर दबाव ना डालें,
वह अनुकूलतम जनसंख्या कहलाए।
जनसंख्या वृद्धि से सबको सुविधाएं न मिल पाएँ,
शोषण ,प्रदूषण आदि समस्याएँ भी उत्पन्न हो जाएँ।।

गंगा, यमुना के मैदान में,
अधिक जनसंख्या है होती।
पहाडी ,पठारी क्षेत्रों में,
जनसंख्या अधिक नहीं होती।।

तो बच्चों अशिक्षा ,परंपरागत विचार,
जनसंख्या वृद्धि के हैं कारण।
देश आर्थिक रूप से होवे सशक्त,
आवश्यक है जनसंख्या संतुलन जागरण।।

पाठ- 8 अर्थ व्यवस्था एवं मानव संसाधन

बच्चों ,अर्थव्यवस्था क्या होती है,
उत्पादन ,वितरण ,खपत की व्यवस्था होती है।
प्राथमिक ,द्वितीयक ,तृतीयक इसके क्षेत्र हैं,
अर्थशास्त्र के जनक एडम स्मिथ हैं।।

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है,
यहां अधिकांश जन कृषि पर ही निर्भर हैं।
उत्तर प्रदेश एक संपन्न राज्य है,
उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी से उर्वर है।।

उत्तर प्रदेश विशाल राज्य है,
भारत की 6.5/ आबादी का करता पालन है।
भौगोलिक संरचना यहां की देती नवान्न है,
इसीलिए कृषि एवं पशुपालन से संपन्न है।।

यहां की नकदी फसल गन्ना मिठाई से पूर है,
दक्षिण की पठारी भूमि खनिज से भरपूर है।
पठारी भाग में दलहनी फसलें बेशुमार हैं,
उत्तर प्रदेश की आबोहवा में प्रेम हो हार है।।

पाठ- 9 प्राकृतिक प्रदेश एवं जनजीवन -1

शीतोष्ण घास के मैदान,
खुले घास के मैदान होते हैं।
दूर-दूर तक घास नजर आती है,
घास प्रदेश में वृक्ष नहीं होते हैं।।

भिन्न-भिन्न देशों में अलग-अलग नाम होते हैं,
रूस में "घास मैदान" को स्टैपी कहते हैं।
अर्जेंटीना में पम्पास कहा जाता है,
संयुक्त राज्य अमेरिका में पेयरीसे जाना जाता है।।

शीतोष्ण घास के मैदानों में,
दूग्ध और खाद्यान खूब होता है।
भूमध्यसागरीय प्रदेश को,
"बागानों की भूमि" से जाना जाता है।।

शीतोष्ण घास के मैदान,
उत्तरी- दक्षिणी अमेरिका में होते हैं।
कैलिफोर्निया, चिली, सीरिया ,तुर्की आदि,
भूमध्यसागरीय जलवायु में आते हैं।

पाठ- 10 प्राकृतिक प्रदेश एवं जनजीवन -2

ग्रीष्म, शीत, वर्षा का मौसम ,
मानसूनी जलवायु में आता है।
मौसमी पवनों द्वारा होती है जब वर्षा,
उन्हें मानसूनी प्रदेश कहा जाता है।।

भारत ,श्रीलंका, सिंगापुर, नेपाल आदि,
मानसूनी प्रदेशों में आते हैं।
विषुवत रेखा से होते जब ये बहुत दूर,
इसी से मानसूनी प्रदेश यूरोप में कहाँ होते हैं??

चावल, दाल ,गेहूं, जूट, गन्ना और कपास,
मुख्य फसलें मानसूनी प्रदेश की होती हैं।
मानसूनी वर्षा से कृषि फूलती फलती है,
इसीलिए आबादी भी यहां अधिक ही होती है।।

महाद्वीपों के पूर्वी तट पर ये प्रदेश स्थित होते हैं,
यहां वनस्पतियाँ अनेक प्रकार की होती हैं।
कभी बाढ़ और सूखा भी है पड़ जाता,
कृषि यहां बहुत कुछ वर्षा पर निर्भर करती है।।

पाठ- 11 आपदा एवं आपदा प्रबन्धन

भूकंप ,बाढ़ और बादल फटना,
यह घटनाएं भी जीवन में होती हैं।
इन घटनाओं को आपदा कहते हैं,
प्राणी -वनस्पतियों को इससे हानि बहुत होती है।।

धरती जब जोर- जोर से हिलती है,
भूकंप आना इसको कहते हैं।
भूकंप जब आ जाता है,
खुले स्थान पर जाकर बच सकते हैं।।

बारिश का जब चरम होता है,
बादल का फटना तब हो जाता है।
पानी की निकासी, सही मकान व्यवस्था से,
इससे भी बचा जा सकता है।।

आओ आपदा प्रबंधन को समझते हैं,
आपदा प्रबंधन से जन- धन हानि से बचते हैं।
प्राकृतिक आपदाओं से तो बच नहीं सकते,
उचित प्रबंधन से प्रभाव हम कम कर सकते हैं।।